॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! मेरे में वह महानता और सत्ता दो, कि मैं इस यज्ञ वेदी को यहाँ भी अपनाता जाऊँ और सूर्य लोक में जाऊँ तो वहाँ भी इसी प्रकार की वेदी उत्पन्न कर, संसार को ऊँचा बनाता चला जाऊँ। हे देव! आप कल्याण करने वाले हैं। मुझे वह सत्ता दो। यदि मुझे आज्ञा मिले तो मैं ध्रुव मण्डल तक जाऊँ तो वहाँ भी यज्ञ वेदी का प्रसार करूँ। हे प्रभु! मेरा जीवन यज्ञमय हो।

हे प्रभु! हमें वह बल दो, वह सत्ता दो, जिससे विधाता! हम संसार रूपी महान् वेदी की रक्षा कर सकें, जिस वेदी पर नाना प्रकार के खरदूषण जैसे दैत्य आ जाते हैं। हे देव! यहाँ ताड़का जैसे राक्षस यज्ञ वेदी को भ्रष्ट करने आ रहे हैं। हे विधाता! मैं चाहता हूँ वह ताड़का आज मेरे द्वारा न आए, वह खरदूषण मेरे द्वारा न आएँ। आज विश्वामित्र और राम जैसे आ करके हमारी रक्षा करें। आज हमें इस भगवान् राम वाले सदाचार को अपनाना है जिससे यज्ञ वेदी की रक्षा होती है। दैत्यों को शान्त किया जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 574 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 649
वर्ष : 49 44 समग्र वर्ष : 55

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. याग और राष्ट्र	पूज्यपाद-गुरुदेव एवं पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी महाराज	5-21
4. जीवन की प्रतिभा	पूज्यपाद-गुरुदेव	22-35
5. माँ दुर्गा	पूज्यपाद-गुरुदेव	36-38
6. ऋषियों के उद्‌गार		39
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		40-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

॥ ओ३म् ॥

याग और राष्ट्र

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं। और जितना भी ये जड़-जगत अथवा चेतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। क्योंकि वो परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं। मानो याग उसका आयतन माना गया है अथवा उसका गृह, उसका सदन है। जब हम ये विचार-विनिमय करना प्रारम्भ करते हैं कि परमपिता परमात्मा मानो अनन्तमयी हैं–संसार की कोई भी स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वो परमपिता परमात्मा नहीं हैं। मानो समुद्रों की कोई तरङ्गें ऐसी नहीं, पर्वतों की कोई गुफा ऐसी नहीं है जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हों। वे सर्वज्ञ हैं।

इसलिए प्रत्येक मानव को मानो देखो, सर्वज्ञता के लिए ही प्रयत्नशील रहना चाहिए। क्योंकि प्रत्येक मानव के हृदय में परम्परागतों से ही ये पिपासा बनी रहती है कि मैं परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाऊँ। मानव अपने मन में जब भी सान्त्वना में विद्यमान होता है चाहे वे मानो देखो, नासीता हो चाहे वह किसी भी प्रकार का प्राणी मानवत्त्व हो परन्तु जिस भी काल में वो शान्त मुद्रा में मुद्रित होता है तो उसी काल में ये विचारता है कि मेरा कल्याण होना चाहिए अथवा मैं परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाऊँ। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ये क्रियाकलाप प्रत्येक मानव के मस्तिष्कों में

चला आ रहा है। परन्तु जब ये विचारते हैं कि **प्रत्येक मानव उस परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना चाहता है, प्रायः बेटा! उसकी आभा में मानव को रत्त भी रहना चाहिए।** परन्तु जब हम ये विचारते हैं क्या ये मानवत्त्व अपने में इस प्रकार के विचार और विलपनाओं वृत्तियों में लगा रहता है जिसमें मानव देखो अपने में निहित होता रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, **परमपिता परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मानव को अपने में अनुसन्धान और विज्ञान में रत्त रहना होगा।** परन्तु दोनों प्रकार का विज्ञान प्रायः मानव के मस्तिष्क में सदैव निहित रहा है– एक भौतिक विज्ञान दूसरा आध्यात्मिक विज्ञान। मानो देखो, दोनों प्रकार के विज्ञान की उड़ान उड़ने वाले परम्परागतों से ही इस मानवीयत्व में रहे हैं। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, विज्ञान अपने में सार्थक है, विज्ञान अपने में महानता की ज्योति वाला है। एक-एक वाक्य को लेकर के ऋषि-मुनियों ने बड़ा अनुसन्धान किया।

महर्षि वैशम्पायन महाराज का जीवन, चिन्तन व मनन

आओ बेटा! आज मैं तुम्हें वैशम्पायन ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ, जिन वाक्यों को मैंने कई काल में उद्गीत रूपों से उद्गीत गाया है और यह विचारता रहा हूँ कि ये मानव अपने में कितना अनुसन्धान करता है, एक-एक शब्द को ले करके वह अनुसन्धान करने लगता है, और ऊँची-ऊँची विलक्षण उड़ाने उड़ने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज अपने में यागों के बड़े विशेषज्ञ माने जाते हैं। बेटा! मुझे जब उनका जीवन स्मरण आता है तो प्रायः हृदय गद्गद् हो जाता है और हम यह कहा करते हैं कि वैशम्पायन ऋषि महाराज, मानो देखो, वृष्टि याग, वाजपेयी याग, अग्निष्टोम याग नाना जैसे अश्वमेध याग और अजामेध यागों में वे बड़े पारायण रहते थे। परन्तु देखो वे प्रातःकालीन ब्रह्म का ब्रह्म-चिन्तन करना उनका स्वाभाविक गुण बन गया था। उनके हृदय में पिपासा जागरूक हो गयी कि मैं न्योदा में मन्त्रों का अध्ययन करके

उसको अपने आलिङ्गन करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज एक समय बेटा! महाराजा अश्वपति के यहाँ याग कराने के पश्चात् वह मुनिवरों! देखो, अपने आश्रम में जब सायँ काल को पहुँचे, मानो देखो, अपने में विचारने लगे और वे निद्रा की गोद में चले गए, रात्रि आने पर। परन्तु जब मध्य रात्रि हुई तो मध्य रात्रि में निद्रा से जागरूक हो गए और जागरूक होकर के उनके समीप कुछ वेदों में नाना मन्त्रों के स्मरण आने लगे। मेरे प्यारे! देखो, वे न्योदामय मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए वे उद्गीत गाने लगे **यज्ञम् भविताम् देवाः यजनम् ब्रह्माः चित्रम् रथं ब्रह्माः द्यौ लोकाः** तो वेद का मन्त्र यह कह रहा था कि यज्ञशाला में विराजमान होने वाला जो यजमान है अथवा होतागण हैं, अध्वर्यु, उद्गाता है। मेरे प्यारे! यज्ञशाला का जितना आकार बना रहता है उतने आकार का रथ बन करके वो द्यौ लोक को जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद मन्त्रों में तो यह कहा जा रहा था। वेद मन्त्र अपने में स्थली में गुणगान अथवा उद्गीत गा रहे थे। बेटा! देखो, ऋषि मनन करने लगा, वैशम्पायन ने ये विचारा कि वेद का मन्त्र मिथ्या तो उच्चारण करता नहीं है। क्योंकि **वेद नाम तो प्रकाश का है** और प्रकाश मिथ्या नहीं होता है परन्तु ये वेद के मन्त्रों के आधार पर मैं कैसे मानो यजमान के रथ को मैं दृष्टिपात करूँ। तो मेरे पुत्रों! देखो, वैशम्पायन चिन्तन में लग गए। बेटा! देखो, अपने में, दर्शनों में घटित करा रहे हैं। क्या **वायु की तरङ्गों पर विद्यमान हो करके मानव का शब्द, वाणी और मानव आकार चला जाता है।** तो मुनिवरों! देखो, जब ऋषि ये दर्शनों से घटित कराने लगे, तो बेटा! साक्षात्कार दृष्टिपात करना चाहते थे। मेरे पुत्रों! देखो, वह ब्रह्मः वाचम् ब्रहे वह प्रातःकालीन हो गया, सूर्य उदय हो गया। निकटतम आसन बेटा! महर्षि विभाण्डक मुनि का था। महर्षि विभाण्डक मुनि ने विचारा क्या आज तो ऋषि ने अपने आसन को नहीं त्यागा है। वह मेरे पुत्रों! देखो, आसन को त्यागने ब्रह्मा वे महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उनके समीप आए। उन्होंने दृष्टिपात किया कि ऋषिवर अपने आसन को उन्होंने नहीं त्यागा है। महर्षि विभाण्डक मुनि

बोले कि महाराज! आप किस गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो रहे हैं, जो मानो इस आसन को नहीं त्याग रहे हैं? उन्होंने कहा ऋषिवर! ये वेद का मन्त्र है न्योदामय मन्त्र मुझे स्मरण है और न्योदा में मन्त्र जो उच्चारण कर रहे हैं मानो देखो, उसी को लेकर के मैं अपने मनन और चिन्तन में लग गया हूँ। मेरा **मनस्तत्त्व, प्राणत्व और मानो देखो, मननशीलता जिसे हम चिन्तन और मनन कहते हैं,** वह हमारे समीप में, उसी में लगा हुआ हूँ। ये वेद मन्त्र ये कहता है कि यजमान का रथ बनकर के द्यौ लोक को जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वे भी अनुसन्धान करने लगे, विभाण्डक मुनि भी विचारने लगे।

ऋषि के आसन पर ऋषि-मुनियों का आगमन

इतने में बेटा! देखो, जब सूर्य उदय हुआ, सूर्य कुछ ऊर्ध्वा में गति किया तो ऋषि-मुनियों का बेटा! एक समाज भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, ऋषि के आसन पर आ गया। मेरे प्यारे! महर्षि प्रह्वाण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी गार्गपथ्य, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी सोमवृत्तिका और यज्ञदत्ता। मेरे प्यारे! देखो, और भी नाना ऋषिवर भ्रमण करते हुए वे ऋषि के आसन पर आ गए। ऋषि ने कहा कहो भगवन् आप कैसी गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो रहे हो? महर्षि वैशम्पायन बोले की महाराज! हम तो वेद मन्त्रों के चिन्तन में लगे हुए हैं। ये वेद मन्त्र कहता है कि यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। हम उस द्यौ लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, कुछ ऐसा स्मरण है कि ऋषि मुनि इसके ऊपर मनन करने लगे परन्तु अपने में तो निपटारा नहीं कर सके। जब निपटारा नहीं कर सके तो समय मानो देखो, मध्य काल से भी ध्रुवा में जाने लगा, तो उन्होंने अपने में विभाण्डक से कहा कि महाराज! मेरे विचार में आता जब हममे निपटारा दर्शनों से घटित तो हो रहा है परन्तु देखो इसको साक्षात्कार दृष्टिपात करना है, तो एक याग का आयोजन किया जाएँ और आज देखो, गमन करके

अयोध्या में हमारा गमन होना चाहिए–राम के द्वारा एक याग का आयोजन। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनियों ने ये वाक्य स्वीकार कर लिया।

ऋषि-मुनियों का अयोध्या के लिए गमन

ऋषि-मुनियों ने वहाँ से गमन किया। आसनों को त्याग करके बेटा! देखो, सायँ काल को वे सुनीति ऋषि महाराज के आश्रम में आए और महर्षि सुनीति ने उनका स्वागत किया और ये कहा मेरा कैसा अहोभाग्य है जो महर्षियों के ब्रह्मवेत्ताओं का मुझे दर्शन हो रहा है। मेरे पुत्रों! उनका अतिथि करने के पश्चात् रात्रि समय वहाँ विश्राम किया और मानो देखो, जब अन्तिम पहर रात्रि का रह गया ऋषि-मुनियों ने सुनीति के आश्रम को त्याग करके बेटा! प्रातःकालीन उनका अयोध्या में गमन हुआ।

भगवान् राम की उपदेश मञ्जरी

मेरे भगवन्! राम के यहाँ नित्य प्रति याग होता रहता था। नित्य प्रति मानो वेदद्ध्वनि होती रहती थी तो उनका याग तो सम्पन्न हो गया था परन्तु देखो राम की उपदेश मञ्जरी प्रारम्भ हो रही थी। राम उच्चारण कर रहे थे– क्या **संसार में मानव को अपने में, अपने में ही समाहित हो करके मानो सुगन्धित होना चाहिए।** मेरे पुत्रों! देखो, सुगन्धित होने के लिए राम का उपदेश चल रहा था। भगवान् राम उच्चारण कर रहे थे **हे राष्ट्रवेत्ताओं! वेद का मन्त्र ये कहता है** क्या राजा के राष्ट्र में मानों प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए, सुगन्धि होनी चाहिए। क्योंकि दो प्रकार की सुगन्धियाँ होती हैं–एक विचारों की सुगन्धि, तो एक साकल्य की सुगन्धि होती है और दोनों सुगन्धियों को हमें अपने राष्ट्र को सुगन्धित करना है। राम का उपदेश चल रहा था कि हमारे यहाँ पाँच प्रकार के यागों का चलन मानो परम्परागतों से ही माना गया है। ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में पञ्च प्रकार के याग की प्रतिभा बनी रहती है। मानो सबसे प्रथम **यागाम् ब्रह्मे जिसे हम ब्रह्म-याग कहते हैं।** ब्रह्म का चिन्तन करना, ब्रह्म का मनन करना और वे ब्रह्म मानो

देखो, सजातीय सर्वज्ञ हैं। मेरे प्यारे! देखो, इस वाक्य को लेकर के ब्रह्म-याग करना है। **देव-याग** करना है क्योंकि देवता ही तो हमें देते हैं, वे देने वाले, जो देवता देता है वही देवता कहलाता है। तो देवताओं का हमें पूजन करना है। पूजन का अभिप्रायः ये (यह) है क्या उनका सदुपयोग करना है। जैसे एक मानव अग्नि की पूजा करना चाहता है। अग्नि का सदुपयोग होना चाहिए। मानो देखो, जैसे मानव जल का पूजन करना चाहता है तो पूजन का अभिप्रायः क्या जल का सदुपयोग होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, वह इस प्रकार की विवेचना भगवान् राम उद्गीत रूपों में क्या मानव को देखो याज्ञिक बनना चाहिए। ये याग है जो मानव को ऋणों से उऋण करने वाला है, क्योंकि **मानव जब संसार में आता है तो एक-दूसरे का ऋणी बन करके आता है** और वो ऋण क्या है बेटा! सबसे **प्रथम ब्रह्म ऋण है।** मानो देखो, हम जिस परमपिता परमात्मा ने, जिस ब्रह्म ने जगत को रचा है मानो देखो, उसका हमें धन्यवाद, उसकी प्रतिभा अथवा उसका ज्ञान और विज्ञान के ऊपर हमारा मनन और चिन्तन होना चाहिए। मानो देखो, वह ब्रह्म का चिन्तन है। वह ब्रह्म-याग कहलाता है। **याग का अभिप्रायः यह है क्या हम मन, कर्म, वचन से मानो देखो, उसकी प्रतिभा उसके मानवीयत्व को हम मनन करने वाले बने।** मेरे प्यारे! देखो, यह उन्होंने कहा–राम का उपदेश था कि **द्वितीय ऋण हमारा देव ऋण है**–जिन देवताओं की सहायता से हमारा जन्म होता है। जिन देवताओं की सहायता से हमारा जीवन गतिशील बना रहता है मानो देखो, ये जो देवता हैं देखो, जैसे पृथ्वी है, ये गुरुत्व देती है और जो जल है ये आपोमयी ज्योति देता है, और मानो देखो, अग्नि प्रकाश, अग्नि उष्ण बनाती रहती है, सूर्य प्रकाश देता है। द्यौ मेरे प्यारे! देखो, ''द्यौ अमृत्वम्'' अमृत को देने वाला है, चन्द्रमा अमृत को बहाने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, वह वायु प्राण देता है और मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष अवकाश देता है। मेरे प्यारे! ये सब देवता हैं। इन देवताओं के प्रति हमारा भी तो कर्त्तव्य बनता है कि हम याग करें। उनको सुगन्धि देने वाले बने, क्योंकि **देवता जब**

सुगन्धि को ग्रहण करते हैं वही तो मुनिवरों! देखो, वह आभा में मानव को परणित करा देते हैं।

भगवान् राम का उपदेश था क्या मैं ये चाहता हूँ कि हमारे राष्ट्र में, अयोध्या राष्ट्र में एक-दूसरे का प्राणी ऋणी नहीं रहना चाहिए। बाह्य जगत में माता-पिता का ऋण है, देवताओं का जो ऋण है इससे उऋण होना है। देवता कौन है, जो देता है। एक चेतन्य देवता है। चेतन्य देवताओं में देखो माता-पितर हैं। माता है पितर है, आचार्यजन हैं जो गुरुजन जिनकी सहायता से हमारे ज्ञान की वृद्धि होती है। हमारा राष्ट्र और मानवीयत्त्व पवित्र बनता है।

मेरे पुत्रों! देखो, भगवान् राम का ये उपदेश चल रहा था। उस उपदेश मञ्जरी जब मानो देखो, उन्होंने **राष्ट्रवेत्ताओं से कहा**–राष्ट्रवेत्ताओं मेरे राष्ट्र में, हमारे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए, सुगन्धि होनी चाहिए। कोई गृह ऐसा न हो जिसमें गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन न हो। क्योंकि प्रत्येक मेरी प्यारी! माता और पितर ये चाहते हैं कि हमारा गृह स्वर्ग बने। परन्तु स्वर्ग जब बनता है मानव का गृह–जबकि **गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन होता है। गृहपत्य नाम की अग्नि का अभिप्रायः यह है कि माता-पिता को अपने आचरणों से पवित्र रहना चाहिए** और माता-पिता जब पवित्र रहते हैं तो उनकी आने वाली जो मानो देखो, सन्तति है, पुत्र, बाल्य-बालिका हैं उसके अनुसार अपना आचरण करने वाले बनते हैं तो गृह स्वर्ग बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, उसे गृहपत्य नाम की अग्नि कहते हैं। **विचारों की जो अग्नि है यही तो गृह को ऊँचा बनाती है। यही तो राष्ट्र को ऊँचा बनाती है। यही वायुमण्डल को महान् बना देती है।**

मेरे पुत्रों! देखो, विचार ये, आज हम बेटा! देखो, गम्भीर मुद्रा में भगवान् राम के उपदेशों का, चरणामृतों का पान करते रहें। मेरे प्यारे! देखो, राम ने कहा घोषणा करो। तो राम देखो, अयोध्या के राष्ट्र में ये परम्परा रही क्या उनके यहाँ प्रत्येक गृह में बेटा! याग वेदद्ध्वनि (वेदद्

ध्वनि) मानो देखो, साकल्य की सुगन्धि, विचार अपने स्थलियों पर नृत्य करता रहा है।

ऋषि-मुनियों का आगमन और उनकी अभिलाषा

मेरे पुत्रों! ऐसा मुझे स्मरण है अयोध्या का राष्ट्र एक मानो पवित्रतम् यागों का एक नोरिक्षेत्र रहा है। तो बेटा! देखो, विचार क्या है? विचार मैं ये दे रहा था क्या राम ने बेटा! अपना उपदेश जैसे समाप्त किया, दृष्टिपात किया नाना ऋषिवर विद्यमान हैं। ब्रह्मवेत्ता अपनी स्थलियों पर विद्यमान हैं। मुनिवरों! देखो, राम उनके चरणों को नत-मस्तक होकर के बोले प्रभु! ये मेरा कैसा सौभाग्य जागरूक हो गया है। मैं तो बड़ा ही सौभाग्यशाली हूँ। हे प्रभु! जो ऋषि-मुनियों का मानो आगमन मेरे यहाँ–कुछ इनमें ब्रह्मवेत्ता हैं, कुछ ब्रह्मवर्चोसि हैं, कुछ मानो देखो, ब्रह्मचरिष्यामि हैं। तीन प्रकार के मानो देखो, महापुरुष होते हैं, तीनों ही मेरे द्वार पर विद्यमान हैं। महर्षि विभाण्डक से बोले क्या हे भगवन्! वैशम्पायन से बोले कि महाराज यदि आप मुझे सूचना दे देते कि हमारा अयोध्या में आगमन हो रहा है तो प्रभु! हम मानो देखो, निमन्त्रण से आपको अपने वाहनों में लाने का प्रयास करते। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कोई वाक्य नहीं हम मानो देखो, अपने अप्रत्यों में, मानो देखो, अपने गृह में प्रवेश हो गए हैं। राम ने बड़ी अपने में हर्षध्वनि की। उन्होंने कहा तो भगवन्! मेरे लिए कोई आज्ञा कीजिए। आज तुम्हारे आगमन का कारण क्या बिना सूचना के? तो मुनिवरों! देखो, उन विभाण्डक को महर्षि वैशम्पायन बोले कि महाराज हम तो इसलिए आए हैं क्या हमारी इच्छा ये तुम्हारे यहाँ एक याग होना चाहिए, ''यागम् भविताम् लोका ब्रह्मेः''। हम एक याग की इच्छा से आए हैं। **राम बोले प्रभु! ये तो इच्छा क्या ये तो मेरा सौभाग्य है, ये तो हमारे इस राष्ट्र का कोई अहोभाग्य है क्या ऋषि-मुनियों की अध्यक्षता में, ब्रह्मवेत्ताओं की अध्यक्षता में याग हो।** जो तपे हुए ब्रह्मयागी हो मानो वो भौतिक याग की मुझे आज्ञा दे रहे हैं।

यज्ञशाला का निर्माण

मेरे प्यारे! देखो, राम ने आज्ञा दी क्या देखो ऋषि-मुनियों को इनके कक्षों में पहुँचाया जाएँ। बेटा! वे अपने-अपने कक्षों में जा पहुँचे। राम ने भोज इत्यादि कराने के पश्चात् श्री कारल से आज्ञा दई क्या तुम एक यज्ञशाला का निर्माण करो। मेरे प्यारे! देखो, यज्ञशाला का निर्माण होने लगा। कुछ समय के पश्चात् बेटा! राम ने नाना प्रकार का साकल्य एकत्रित करते हुए उन्होंने बेटा! यज्ञशाला का निर्माण कराया। यज्ञशाला ऐसी प्रतीत होती थी जैसे ये ब्रह्मपुरी हो। मानो जैसे ब्रह्मा का आसन और ये विष्णुपुरी की आभा में गति कर रहा हो। मेरे प्यारे! देखो, जब यज्ञशाला का निर्माण हो गया, भव्यता में परणित हो गयी और उन्होंने नाना प्रकार के साकल्य श्रद्धामयी घृत को जन्म देते हुए उन्होंने ऋषि-मुनियों से कहा आइए भगवन्! आपकी यज्ञशाला पूर्णत्व को प्राप्त, आप याग का प्रारम्भ कीजिए। ऋषि-मुनि बड़े प्रसन्न हुए।

याग का प्रारम्भ

मेरे प्यारे! देखो, राम ने सब ऋषि-मुनियों का यज्ञशाला में आगमन कराया और उनका भिन्न-भिन्न रूपों में बेटा! देखो, उनका निर्वाचन हुआ। और वह निर्वाचन कैसे मानो देखो, वैशम्पायन ऋषि महाराज को याग का ब्रह्मा बनाया गया। महर्षि विभाण्डक और महर्षि सोमकेतु मानो देखो, दोनों को उद्गाता के रूप में परणित किया। वह उद्गीत गाते रहते हैं और मुनिवरों! देखो, ''विभाण्डक अम्ब्रहे वाचन्नमः'' मानो प्रह्वाण को उस याग का मुनिवरों! देखो, अध्वर्यु नियुक्त किया गया और वशिष्ठ को पुरोहित की मानो उपाधि प्रदान करके बेटा! याग का प्रारम्भ होने लगा। मेरे प्यारे! देखो, जब याग का प्रारम्भ हुआ वही न्योदामय मन्त्र बेटा! याग में उद्गीत रूपों में गाए जाने लगे। विभाण्डक मुनि महाराज ने जब बेटा! वेदों का उद्गीत गाया और वेद कहता था **''यज्ञमानम् ब्रह्मा वाचप् प्रव्हे द्यौ लोकाम् ब्रह्मे रथम् चित्रम् गत प्रवाणां वर्ति देवाः''**। मेरे प्यारे! वही वेद

का मन्त्र स्मरण आ रहा था क्या मानो देखो, यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। मैं द्यौ लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। राम ने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! याज्ञिक पुरुषों मैं तुम्हारे समीप हूँ मानो मेरी इच्छा यह है क्या मैं इस याग को, इस यन्त्र को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने ये कहा तो ''रामं ब्रह्मे'' वह अपने में मानो अनुसन्धान करने लगे, दर्शनों से घटा रहे हैं। राम कहते हैं मैं तो साक्षात्कार दर्शन करना चाहता हूँ। मैं, दर्शनों से तो मैं भी इसको जानता हूँ।

महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज का शिष्यों सहित यज्ञशाला में प्रवेश

मेरे प्यारे! देखो, इतने में ही महर्षि भारद्वाज बेटा! अपने यन्त्र में, वाहन में विद्यमान होकर के वह राम की यज्ञशाला में आ पधारे। मेरे प्यारे! देखो, जिसमें ब्रह्मचारिणी शबरी और ब्रह्मचारी महर्षि स्वाति और मुनिवरों! देखो, पप्पेतु मुनि महाराज इनका जब आगमन हुआ, तो राम ने स्वागत किया। महर्षि भारद्वाज बोले राम! तुम्हारा याग अब तक प्रारम्भ नहीं हुआ है? उन्होंने कहा भगवन्! प्रारम्भ तो हो गया है, वेद में न्योदामय ये मन्त्र आ रहे हैं कि यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। मैं उस रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ, भगवन्! उन्होंने कहा क्या हे राम! तुम ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान तो नहीं कर रहे हो? मेरे पुत्रों! राम ने कहा प्रभु! मैं तो ऋषि-मुनियों के चरणों की धूलि हूँ भगवन्! मैं इनका मानो अपमान कैसे कर सकता हूँ। मेरे में इतनी शक्ति कहाँ है जो मैं इनका अपमान कर सकूँ। प्रभु मैं तो जानना चाहता हूँ, मैं तो जिज्ञासु हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा प्रियतम्! तो भारद्वाज को विश्वास हो गया। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने ब्रह्मचारिणी शबरी से कहा क्या जाओ मानो तुम यन्त्रशाला में, विज्ञानशाला में कजली वनों से यन्त्रों को लाया जाए। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि पप्पेतु ब्रह्मचारिणी शबरी ने वहाँ से बेटा! सुकेता ने गमन किया और भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! देखो, वह कजली वनों में पहुँचे, वहाँ से चित्रावलियों को लाया गया।

साक्षात्कार चित्रों का दर्शन

बेटा! देखो, चित्रावली स्थिर हो गई और देखो, भारद्वाज ने कहा राम तुम अपने याग का प्रारम्भ करो। और याग प्रारम्भ होने लगा। मेरे प्यारे! देखो, वो जो **यन्त्रावली स्थित कर दी विद्युत से गूँथ करके,** उन्होंने मुनिवरों! देखो, जैसे स्वाहा उच्चारण करते थे उनके स्वाहा के शब्द के साथ में अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके यज्ञशाला का आकार एक रथ के रूप में मेरे पुत्रों! देखो, वह दृष्टिपात आने लगा उन यन्त्रों में। मेरे पुत्रों! वो द्यौ लोक में जाता हुआ रथ दृष्टिपात आ रहा था। राम से कहा राम! देखो ये साक्षात्कार चित्रों का दर्शन करो। मेरे प्यारे! राम बड़े प्रसन्न हुए। राम ने कहा धन्य हे भगवन्! मैं तो मानो देखो, महर्षि वैशम्पायन के हर्ष की कोई सीमा न रही। बेटा! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा राम तुम जानते हो शबरी को, जानते हो? उन्होंने कहा प्रभु मैं उनको क्यों नहीं जानता। उन्होंने कहा कैसे जानते हो? उन्होंने कहा कि जब मैं लङ्का को विजय करने जा रहा था तो मानो देखो, शबरी ने मुझे अस्त्रों-शस्त्रों का सर्वत्र कोष मुझे प्रदान कर दिया था। मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि ने वह अस्त्रों-शस्त्रों का कोष मुनिवरों! देखो, वह शबरी के द्वारा राम को प्रदान कराया था। जब मुनिवरों! देखो, रावण से संग्राम हुआ था तो मुनिवरों! ये महर्षि पण्पेतु मुनि महाराज की कन्या थी। और मानो देखो, उस समय वह अपने में बड़ी दक्ष और विज्ञान में मानो पारायण थी। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! राम ने कहा ये तो मेरी माँ, ममतामयी हैं। मानो देखो, मैं सदैव ऐसी महादेवियों का सदैव पूजन करता रहता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, भारद्वाज वहीं विद्यमान हो गए और चित्रों का दर्शन यन्त्रों में आने लगा।

मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है वो छः माह तक याग प्रारम्भ रहा। छः माह के पश्चात् याग सम्पन्न हुआ, सम्पन्न होकर के राम ने बेटा! देखो, दक्षिणा प्रदान करके ब्राह्मण इत्यादियों को बेटा! सबको कहा कि भगवन्! आपका याग पूर्ण हो गया। वैशम्पायन बड़े प्रसन्न हुए। ऋषि-मुनि अपने में, दर्शनों

की आभा में मानो देखो, वह निहित हो गए। उन्होंने कहा धन्य हे प्रभु! तो बेटा! याग, मानो याग जब सम्पन्न हुआ तो भारद्वाज मुनि महाराज का पुनः आगमन हुआ। भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा राम मेरी यन्त्रशाला में ऐसे-ऐसे यन्त्र विद्यमान हैं, ऐसी-ऐसी चित्रावली विद्यमान हैं, एक रक्त का बिन्दु मानों यन्त्रों में प्रवेश किया तो उस मानव का रक्त का बिन्दु है उस मानव का साक्षात्कार चित्र दृष्टिपात आने लगता है। मानो देखो, चित्र बन जाता है। जितने मानव के रक्त के बिन्दु उतने मानव उसी रूप में मुझे दृष्टिपात आते हैं, यन्त्रों के द्वारा। तो मेरे प्यारे! महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के विद्यालय में नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहता था। विचार-विनिमय–तो भारद्वाज ने कहा कि हमारे मानो देखो, अग्नि की धाराओं पर शब्द और चित्र विद्यमान हो करके अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, **एक-एक रक्त के बिन्दु में मानव का चित्र विद्यमान है।** मानव की मानवीयता विद्यमान रहती है। तो मुनिवरों! देखो, भारद्वाज ये उद्गीत गाते हुए मानो देखो, याग से अपने यन्त्रों को अयोध्या से लेकर के बेटा! अपने आश्रम को उन्होंने गमन किया। तो अभिप्राय क्या मेरे प्यारे! ''यागम् रुद्रम् भविते लोकाम्''। हमारे यहाँ जो ये याग है, ये परम्परागतों से ही बेटा! बड़ा एक विज्ञानमयी रहा है। ये विज्ञानमयी एक धारा है जिसको प्रत्येक मानव बेटा! परम्परागतों से ही.... आज मैं बेटा! कुछ याग के सम्बन्ध में अपनी चर्चा कर रहा था। मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे प्रेरणा दी कि याग के सम्बन्ध में कोई चर्चाएँ होनी चाहिएँ। तो मानो देखो, आज **मैंने याग के सम्बन्ध में ये वाक्य, मैं समय-समय पर मानो उच्चारण करता रहता हूँ। और राम की अप्रितम उनके गुणगानों में मानो देखो, उनके क्रियाकलापों की चर्चाएँ होती रहती हैं।** तो आओ, मेरे पुत्रों! आज का विचार हमारा ये क्या कह रहा है। हम परमपिता की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। अब मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

''ओ३म् दधिमारथम् आभ्याम् रूद्राः''

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भ्रद ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ रहे थे। मानो याग के सम्बन्ध में और राम के जीवन काल की बहुत-सी चर्चाएँ जिन्होंने राष्ट्र और मानवता को एक सूत्र ही में पिरोने का प्रयास किया। मानो आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! देखिए याग की चर्चा कर रहे थे। मैं सदैव आधुनिक काल में चला जाता हूँ और पूज्यपाद गुरुदेव को मैं परिचय कराता रहता हूँ। और वह परिचय क्या है, मेरा तो वही उद्‌गीत है कि मैं तो राष्ट्रवाद की चर्चा करता रहता हूँ। मानो ये राष्ट्रवाद और देखो, आज जहाँ हमारी ये आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन अथवा याग सम्पन्न हुआ है। सामगान की आभा में मानो याग सम्पन्न हुआ है।

आधुनिक काल

आधुनिक जो काल है इस काल को मैं वाममार्ग काल कहा करता हूँ। ये वाममार्ग का काल है। वाममार्गी कौन होते हैं? मानो जो सुरा में और दूसरों के रक्त को पान करने वाले होते हैं, वे वाममार्गी होते हैं। क्योंकि **महाभारत काल के पश्चात् वाममार्गियों का जन्म हुआ।** वाममार्ग आया कि उन्होंने देखो, याग के ऊपर आक्रमण किया। याग के ऊपर आक्रमण करने वालो में महाभारत काल के पश्चात् जो याग का ''दुरूः अर्त्तम्'' मानो उसका दुरुपयोग करता है तो वाममार्गी कहलाता है और उनमें देखो किस प्रकार किया गया क्योंकि याग एक ''अहिंसा परमोधर्मीः'' मानो देखो, एक प्रथम चरण है। जब मानव देखो, परमात्मा के मार्ग में गमन करता है और उसमें देखो वह हिंसा में गुथा हुआ है। आधुनिक, मानो देखो, जब वाममार्ग काल आया महाभारत के पश्चात् तो यागों में मानो देखो, अश्वमेध याग में घोड़े के अङ्गों की आहुति दी गई, गौमेध याग में गौ के अङ्गों की आहुति दी गई, अजामेध याग में बकरियों के अङ्गों की आहुति दी गई। और देखो, वाजपेयी

याग में बैल की बलि का वर्णन आया। परन्तु देखो इसी प्रकार अग्निष्टोम याग में यहाँ और भी नाना प्रकार की अशुद्धता में अशोभनीय ये चर्चाएँ होती रहीं। परन्तु देखो, इसका जब आक्रमण विशेष हो गया, तब याग तो रहा नहीं, मानो जब माँस को–गौ माँस, अश्व के माँस को प्रसाद के रूप में पान करते थे। मानो देखो, ये अन्धकार, यह आज भी पर्वतीय क्षेत्रों में भी प्रायः ऐसा होता है। उस कर्मकाण्ड की पद्धति को न जानकर के अन्धकार में मानो वे अपने समाज को ले गए हैं। जब इन क्रियाकलापों में प्रवेश होता हूँ। अपने पूज्यपाद गुरुदेव को मैं परिचय कराता रहता हूँ क्या मानो देखो, ये मानो जिसको हम वाममार्ग कहते हैं, वो अन्धकार की प्रतिभा में रत्त हो गया है। वह अन्धकार अपने में अन्धकारित हो गया है। विचार क्या देखो, यागों के न होने पर मानव ने अपने मुखारबिन्दुओं को इतना आहार और व्यवहार में इतना अशुद्ध बनाया है क्या वो नाना प्रकार के माँसों को पुनः भक्षण कर रहा है। ये भक्षण कर रहा है, सुरा को पान कर रहा है। सुरा को देखो, वह माँस को पान करता हुआ अपने में हर्ष ध्वनि कर रहा है। हे मानव! तुम मानो देखो, ये अपने में तू क्यों नहीं पवित्र बनता है? विचार क्या मानो ''ब्रह्मे वाचप् प्रवाहः लोकाम्''। हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! इस काल को मैं वाममार्ग काल कहता हूँ जहाँ राजा से ले करके प्रजा, सब मानो देखो, वह सुरा और माँस में हैं और सुन्दरियों में लगा हुआ यह समाज है। जब मैं ये विचारता रहता हूँ–जब मैं राष्ट्रवाद पे जाता हूँ राम का राज्य ऐसा था जो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी चर्चा कर रहे थे। **राम प्रातःकाल में जल का देखो, अमृत का सेवन करते थे।** आधुनिक काल का जो राष्ट्रवेत्ता है वो नाना प्राणियों के रसों को अग्नि में तपा करके उसको पान कर रहा है, वे माँस का पान कर रहा है। परन्तु कहता है कि मेरा राष्ट्र राम राज्य हो जाना चाहिए।

अरे! राम राज्य कैसे हो सकता है जब आहार और व्यवहार ही पवित्र नहीं रहा है। मानो देखो, राष्ट्र, राजा के राष्ट्र में आधुनिक काल में हिंसक प्राणी बना हुआ है। और हिंसक का परिणाम है नाना प्रकार की सम्प्रदाय हैं, नाना प्रकार का जो ये सम्प्रदायवाद है, जो नाना धर्म उच्चारण कर रहा

है। अरे! धर्म तो मानो एको ही होता है। धर्म नाना नहीं हुआ करते हैं। नाना तो रूढ़ियाँ होती हैं। नाना मानो देखो, रूढ़ियों को नष्ट करना राष्ट्र का कर्त्तव्य है। यदि राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नष्ट होनी चाहिए। जहाँ देखो, सुगन्धि आनी चाहिए विचारों में, साकल्यता की सुगन्धि होनी चाहिए। और ये नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं, ये नष्ट हो जानी चाहिएँ जो भी रूढ़ियाँ हैं। ये रूढ़ियाँ एक-दूसरे प्राणी को नष्ट करना चाहती हैं। इसीलिए वो रूढ़ियाँ समाप्त हो जानी चाहिए। मानवत्त्व रहना चाहिए। मानवीयत्व जो धर्म है, जिसे हम प्रकाश कहते हैं, वो मानवता के हृदयों में देव रहना चाहिए, कर्त्तव्यवाद रहना चाहिए। और देखो, जो पुकार कर रहा है, कर्त्तव्य कर नहीं रहा है वह तो रक्तभरी क्रान्ति का संचार उत्पन्न कर रहा है।

अधिकार और कर्त्तव्यवाद

जब मैं ये विचारता हूँ, कि आधुनिक जगत में ''अप्रम ब्रहेः'' क्या मानो देखो, अधिकार को चाहता है, कर्त्तव्य का पालन नहीं कर रहा है। और अधिकार-अधिकार चाहता है। उसके अधिकार के मूल में मानो देखो, हिंसा विद्यमान है। हिंसा है, क्योंकि कोई भी मानव अधिकार की पूर्ति नहीं कर सकता। और जब अधिकार की पूर्ति नहीं होगी, तो रक्त भरी क्रान्ति स्वतः आती रहेगी। तो विचार क्या है? मानो देखो, यहाँ हे मानव! तू अपने कर्त्तव्यवाद का पालन कर। जब वेद के मार्ग को अपनाने लगता है। मानो वेद कहता है तू कर्त्तव्यवादी बन। परमात्मा, वह जो **परमपिता परमात्मा है, वो न्यायाधीश है, वो न्याय करता रहता है** तो ''ब्रह्मेः वृत्तम्''। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मुझे वर्णन कराते रहते हैं। मैं भी ये वाक्य वर्णन करता रहता हूँ। हे पूज्यपाद गुरुदेव! मानो देखो, ये आधुनिक काल की चर्चाएँ हैं।

याग और यजमान को आशीर्वाद

जहाँ यागों में मैं ''यागां ब्रह्मलोकाम्''। देखो, यागों का उत्थान होना चाहिए। क्योंकि याग से सुगन्धि होती है। याग से वायुमण्डल पवित्र होता

है। याग से मानव के गृह का मानो देखो, शुद्धिकरण होकर के द्रव्य का सदुपयोग होता है। द्रव्य का सदुपयोग करना ही तो मानवीयता कहलाती है। तो मेरे, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल ये कि यजमान यहाँ देखो, ऐसे काल में हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मेरी तो सदैव ये कामना रहती है। और मेरा हृदय यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और मानो तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। क्योंकि **गृह में द्रव्य का सदुपयोग होना ही ये मानवीयता कहलाती है** यही मानो देखो, सात्विकता में मानव रत्त रहता है।

नाना प्रकार की रूढ़ियों को त्याग करके अपने गृह में याग और सुगन्धि का प्रसार करना राजा के राष्ट्र में होना चाहिए। राजा ऊँचा बनाना चाहता है राष्ट्र को तो सुगन्धित होना चाहिए। वह अपने विचारों में, अपने आहार में दुर्गन्धित हो रहे हैं तो समाज मानो देखो, विकृत होता जा रहा है। तो विचार क्या है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव! को वर्णन करा रहा हूँ क्या वो राम की चर्चा कर रहे थे। आधुनिक काल के राम की चर्चा मैं देना नहीं चाहता हूँ। क्या वो क्या-क्या करते हैं अपने जीवन में। परन्तु देखो राष्ट्र की पद्धति भ्रष्ट हो गयी है। भ्रष्ट हो जाने से मानो देखो, अन्धकार छाया जा रहा है। विचार क्या है? मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव, हे देव! मानो ये जो आधुनिक जगत है ये बड़ा एक विकृत है। मानो मानव देखो रूढ़िवाद से ईश्वरवाद के ऊपर मानव, मानव को नष्ट करना चाहता है, नष्ट कर रहा है। परन्तु देखो ये भी समाज ''ब्रह्मे वाचाः'', मेरी तो यही कामना रहती है हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग हो मानो देखो, ये कामना मेरी रहती है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे! महानन्द जी ने अपने विचार दाहयुक्त अपने उद्गीत रूपों में गाए। मानो देखो, इनके हृदय में राष्ट्रवाद

के प्रति, कर्त्तव्यवाद के प्रति मानो कितनी उनके हृदय में दाह है। कितनी एक मानो देखो, अग्नि प्रदीप्त हो रही है। इसीलिए वो समय भी शनैः-शनैः आ रहा है। मानो **क्रान्ति के पश्चात् शान्ति है और शान्ति के पश्चात् क्रान्ति की उपलब्धि हुआ करती है।** ये तो समय आता रहता है। वायुमण्डल अपने में गति कर रहा है। परमाणु छा रहा है। तो ये आज का विचार क्या। क्या प्रत्येक मानव को अपने कर्त्तव्यवाद की आभा में सदैव निहित रहना चाहिए। आज का विचार क्या मानो देखो, प्रत्येक मानव अपने में मानवीयता की आभा में रत्त है। यह आज का वाक्य अब समाप्त होने जा रहा है। समय मिलेगा शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये क्या मानव को अपने कर्त्तव्यवाद, मानवीयता में सदैव रत्त रहना चाहिए। यह आज का वाक्य समाप्त। हमारे यहाँ यागों का चलन विज्ञान में, राष्ट्रीयता में बड़ा महत्त्वपूर्ण रहा है। यह आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मा वाचा यं सर्वाः।
ओ३म् देवाऽहं मनु गा वाचन्नमः वायु गताः।

महर्षि महानन्द जी—अच्छा भगवन्! शान्ति।

दिनाँक : 6 जनवरी, 1987
स्थान : ग्राम चन्दसारा, मेरठ

सूचना

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80-जी के अन्तर्गत छूट को मिल गई है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

जीवन की प्रतिभा

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा के गुणों का गुणवादन करता रहा है। जिस भी वेद मन्त्र को तुम उद्गीत गाने लगोंगे, उसी वेद मन्त्र में उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की महिमा का वर्णन आता रहा है। क्योंकि परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान बड़ा अनूठा और अनुपम है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं और वे सीमा में आने वाले नहीं हैं। इसीलिए हमारे यहाँ जितना भी क्रियाकलाप है चाहे वह ज्ञान-विज्ञान हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान हो, चाहे वह राष्ट्रवाद ही क्यों न हो, परन्तु वे सर्वत्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का एक प्रतीक माना गया है। क्योंकि प्रत्येक मानव उसी में रत्त रहा है और गान गाता रहा है। तो उस परमपिता परमात्मा का जो विज्ञान है, वह बड़ा अनूठा है अथवा विचित्र है। मानव तो अपने में विचार-विनिमय कर रहा है और अपने हृदय की तरङ्गें परमात्मा के हृदय से समन्वय करने का वो प्रयास करता रहा है और उन तरङ्गों को जानता-जानता वह भौतिक विज्ञानवेत्ता बन जाता है। परन्तु वही आत्मा का जो अनुपम विषय है, वह इस आत्मतत्त्व में भी गमन करने

लगता है। और जहाँ आत्म विज्ञान का प्रारम्भ होता है, वहाँ मुनिवरों! देखो, भौतिक विज्ञान का समापन हो जाता है। तो विचार आना चाहिए, हमारे यहाँ विचारवेत्ता कहते हैं कि हम परमपिता परमात्मा का जो अनूठा ज्ञान और विज्ञान है। माता के गर्भ से ले करके और पृथ्वी के गर्भ तक मुनिवरों! देखो, ये संसार अपनी आभा में रत्त होता रहा है।

सोम

मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वेद मन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान एक प्रेरक है। और वह प्रेरणा देता रहता है। और मानो अपने क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहता है। इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महती और उसका आनन्दमयी जो स्रोत है, उसको हम पान करते रहें। जैसे एक मानव औषध विज्ञान में रमण करता है और औषधियों का अनुपात बनाना प्रारम्भ करता है। तो मुनिवरों! देखो, वो रुग्णों का समाप्त करने वाला एक सोम बन जाता है। इसी प्रकार **परमपिता परमात्मा का जो आनन्द है अथवा उसमें रत्त रहना, वो एक सोम कहलाता है।** हमारे यहाँ ऋषि-मुनि इस प्रकार के औषध विज्ञान को सदैव अपने में पान करते रहे हैं। जिससे उनके अन्तर्हृदयों में मानो किसी भी प्रकार की विकारात्मक प्रवृत्ति, तो वह मुनिवरों! देखो, उस आहार से वो शमन हो जाती है और वो अपने में शमन करता हुआ, मुनिवरों! देखो, उसको एक प्रेरणा आती रहती है। और वह मानो शुद्ध पवित्र तरङ्गों का जन्म होता रहता है। और उन्हीं तरङ्गों का मिलान करता हुआ, मानो परमपिता परमात्मा का जो तरङ्गमयी जगत है, इसमें वो रत्त हो जाता है। तो अपने में सोम को प्राप्त करने लगता है।

राष्ट्र निर्माण

तो आओ मुनिवरों! देखो, इस सम्बन्ध में यहाँ सोम की मैं चर्चा नहीं कर रहा हूँ। क्योंकि सोम की चर्चा करते हुए बहुत पुरातन काल हो गया है जब सोम के ऊपर ऋषि-मुनि अपनी विचारधारा प्रगट करते रहे हैं। आज

मैं उस सन्दर्भ में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल ये कि हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है। वेद मन्त्र नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा है। और वेद मन्त्र कहता है ''सम्भव प्रव्हा'' मेरे प्यारे! देखो, हम अपने में ''राष्ट्रम् ब्रव्हे क्रतम्'' क्योंकि प्रत्येक मानव देखो, राष्ट्र की चर्चा कर रहा है। राष्ट्रवाद को मानो देखो महान् बनाना चाहता है। मैंने बहुत पुरातन काल में, मेरे प्यारे! महानन्द जी ने भी इससे पूर्व जो अपना विचार दिया, वह राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में था। परन्तु राष्ट्रवाद को कैसे उन्नत बनाया जाए। इसके ऊपर हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में नाना प्रकार की विचारधारा आती रही हैं। वास्तव में तो ये रहा है, क्या जब तक एक-दूसरे का मानव अपने में अनुशासन की प्रवृत्ति से वह अपने में देखो अनुशासन कर रहा है, तो वो अनुशासन मानो एक समय तो रक्तभरी क्रान्ति बन करके रहेगा। परन्तु देखो वह राष्ट्रवाद किसलिए है? भगवान् मनु और कालेत्वर ऋषि की चर्चाएँ हमने कई काल में तुम्हें प्रगट की हैं। **महर्षि कालेत्वर ऋषि महाराज मनु जी के गुरु आचार्य थे।**

मुनिवरों! देखो, जिस समय समाज में यह कर्त्तव्यवाद आया। यह कर्त्तव्यवाद आने के पश्चात् देखो ये निर्णय किया गया। वेद मन्त्रों के माध्यम से क्या ये जो मानव देखो अपने कर्त्तव्य से विहिन हो रहा है। इसीलिए मानव को कर्त्तव्यवादी बनना चाहिए। और कर्त्तव्यवादी जब बनता है, जबकि राष्ट्रवेत्ता अपने में ब्रह्मवेत्ता हो और वह कर्त्तव्यपारायण हो। और इन्द्रियों पर अनुशासन करने वाला हो। जब तक इन्द्रियों पर अनुशासन नहीं किया जाता तो राष्ट्रवाद भी कदापि ऊँचा नहीं बनता। व मानव के इसको मानव के ऊपर कोई आधिपत्य रहा करता है। क्योंकि वह समाज बहुत समय तक स्थित रहता है।

महर्षि कालेत्वर ऋषि महाराज राष्ट्र निर्माण प्रणाली

विचार आता रहता है, मुझे बहुत-सा काल स्मरण है। कालेत्वर ऋषि महाराज ने जो निर्माण की प्रणाली का निर्वाचन किया तो उन्होंने देखो ये

कहा है कि सबसे प्रथम निर्वाचन देखो विद्यालयों में होना चाहिए। जब हमारे विद्यालय पवित्र बन जाते हैं। और विद्यालयों में एक महानता का प्रदर्शन होने लगता है। आचार्य इतने अनुशासित होने चाहिए जिससे उनके विचार, उनकी प्रतिभा और उनकी महानता मानो देखो ब्रह्मचारियों और छात्र-छात्राओं के हृदयों में वह प्रविष्ट हो जाए। और वह मानो देखो एक अनुवाती, वह अपने में अनुवाक्यों का पठन-पाठन करने लगें जिससे उनका अन्तर्हृदय पवित्र बन जाए। तो मानो देखो निर्वाचन की प्रणाली कहाँ उत्पन्न होती है, विद्यालयों में, आचार्यों के समीप। और आचार्यों को आयुर्वेद का अध्ययन करना चाहिए। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने मानो पुत्र के सम्मुख हो करके ये कहा था, क्या संसार में, जब भी कल्याण होता है समाज का अथवा समाज को उन्नत बनाया जाता है तो निर्वाचन प्रणाली देखो विद्यालयों में, और विद्यालयों में आचार्यजन कैसे होने चाहिए, जो सुसज्जित हों और हृदय पवित्रता से, मानो देखो विद्या से और वे परमपिता परमात्मा का अनुवाक्यों का गुणगान गाने वाले हों और प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर अनुशासित हो करके मन, प्राण और विचार को ले करके जब वो अपने में तत्पर होते हैं तो देखो उनकी जो साधना है अथवा उनकी जो प्रवृत्तियाँ है वे सदैव ''मानन् ब्रव्हे क्रतम्'' वह सदैव मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारियों के हित में होती हैं और वही ब्रह्मचारी देखो राष्ट्र का निर्माण करते रहते हैं।

निर्वाचन और धर्म

जहाँ ब्राह्मण का निर्वाचन है, जहाँ क्षत्रिय का निर्वाचन है, जहाँ वैश्य का निर्वाचन होता हो और निर्वाचन करने वाले देखो विद्यालयों में आचार्यजन होते हैं। विद्या के ऊपर मुनिवरों! देखो, जिसका आधिपत्य हो उसी आधार को ले करके जो अपनी प्रवृत्तियों को निर्वाचित करता रहता है। प्रवृत्तियों को मुनिवरों! देखो, ऊर्ध्वा में गमन कराता रहता है तो देखो राष्ट्र उस काल में ऊँचा बनता है। पवित्रतम को प्राप्त होता है। परन्तु देखो

धर्म की प्रणाली को अपनाना ही हमारा कर्त्तव्य है। मेरे पुत्र ने मुझे बहुत ऊर्ध्वा में एक वाक्य प्रगट किया। कि हमारे यहाँ देखो धर्म एक ही होता है। धर्म एकोकी वचन कहलाता है। वो मानो धर्मों में, मानो देखो धर्म नहीं होता। वह रूढ़ियाँ होती हैं। देखो ये रूढ़ियाँ राजा रावण के काल में भी रही हैं। ये रूढ़ियाँ मानो देखो विष्णु राष्ट्र में भी रही हैं। परन्तु देखो वहाँ जब राजाओं का निर्वाचन होता रहा, बुद्धिमानों के द्वारा। देखो अपठित समाज के द्वारा राष्ट्र का निर्माण जब भी होता है, तभी संसार में रक्तभरी क्रान्ति के अवशेषों का जन्म होता रहा है। क्योंकि मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहा है, तो यहाँ अमृतम् देखो, राजा रावण के काल में भी एक शेव मत का हनन हुआ था। मानो देखो वह निर्वाचन ब्रह्मेः वह जब देखो, शेव मत बना, सम्प्रदा बना तो सम्प्रदा को देखो नष्ट करने के लिए, रावण ने सबसे प्रथम, जब राष्ट्र स्थली पर वो विद्यमान हुए तो उन्होंने देखो उस मत-मतान्तरों की प्रतिभा नष्ट की। और उन्होंने अपने में देखो अश्वमेध याग किया। और अश्वमेध याग देखो वो राजा करता है जो प्रजा, प्रजा को महान् बनाना चाहता है। अश्व नाम देखो राजा का है। मानो देखो, प्रजा का अश्वमेध कहा जाता है। क्योंकि राजा का नाम अश्व है और मेध नाम प्रजा का है। जब प्रजा और राजा देखो दोनों मिल करके देखो संसार को ऊँचा बनाते हैं, समाज को धर्म की प्रणाली को ऊर्ध्वा में गमन कराते हैं तो वो महानता में गमन करने लगता है।

यौगिकता

आओ देखो मैं तुम्हें, आज (तुम्हें) विशेष विचार देना नहीं चाहता हूँ। जैसा मेरे प्यारे महानन्द जी! ने इससे पूर्व काल में अपना विचार दिया है। उन्हीं विचारों के तारतम्य में अपने विचारों को व्यक्त कर रहा हूँ। और वह विचार क्या है कि हम अपने में आध्यात्मिकवेत्ता बने। क्योंकि राजा के राष्ट्र में आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता होने चाहिए। जिससे देखो राष्ट्र और समाज और यौगिकता से देखो ये समाज ऊँचा बनता है। क्योंकि यौगिकता

बहुत अनिवार्य है। योग किसे कहते हैं। हमारे यहाँ योग के ऊपर नाना प्रकार की विचारधाराएँ आती रहती हैं। योग कहते हैं जहाँ मन और प्राण का दोनों का समन्वय होता है। और विचार उसके पश्चात् तरङ्गों का जन्म होता है। और वे तरङ्गों में तरङ्गित होने वाले अन्तःआत्मवेत्ता, मेरे प्यारे! देखो, प्रभु से मिलान करते हैं। क्योंकि **जब तक इन्द्रियों का विषय, मुनिवरों! देखो, वह मनस्तत्त्व ब्रह्मणाः मन को प्राप्त नहीं होता और मन का विषय देखो, प्राण में समाहित नहीं होता। और प्राण का विषय विचार में समाहित नहीं होता, जब तक मानव की ब्रह्मचर्य की गति ऊर्ध्वा में नहीं बनती।** और जब ब्रह्मचर्य की गति ऊर्ध्वा नहीं बनती तो मुनिवरों! देखो, वो ध्रुवा बनी रहेगी। और जब ऊर्ध्वा बन जाती है तो **ऊर्ध्ववेत्ता का नाम ही मुनिवरों! देखो, ऋषि और मुनि कहा जाता है।** जब तक ऊर्ध्वा ऊर्ध्ववेत्ता नहीं बनेंगे। ऊर्ध्ववेत्ता कौन बनता है जो ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है। **ब्रह्मचरिष्यामि का नाम ऊर्ध्ववेत्ता है।** ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और प्रकृति कहते हैं चरि को। जब चरि और देखो ब्रह्म का, दोनों का समन्वय होता है तो यह संसार की रचना होती है। इसी प्रकार मानव के जीवन में जो रचना का एक बविसार बना हुआ है। वह उसी काल में होता है जबकि देखो वो ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। ''ब्रह्मम् ब्रह्मेः क्रतम् देवाः'' प्रत्येक श्वास की गति को जब वह ब्रह्म में परणित कर देता है, तो मुनिवरों! देखो, प्रत्येक श्वास में ब्रह्म का ही दर्शन करता है। वह **योगेश्वर** कहलाता है और उसकी प्रवृत्ति इस ब्रह्म को, परमात्मा के जगत को जानते-जानते कि मानो सौम्य बन जाती है। जैसे बाल्य प्रवृत्ति होती है। वह ज्ञान और बाल्य प्रवृत्ति होती है। और बाल्य प्रवृत्ति देखो अज्ञानिक प्रवृत्ति होती है। परन्तु बाल्य जैसी उसकी धारणा हो और मुनिवरों! ज्ञान में वो पारायण हो। ऐसे महापुरुष को हमारे यहाँ **मुनि** कहा जाता है। वे ऋषि और मुनि कहलाते हैं। **ऋषि** कहते हैं जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर उतना उनका आधिपत्य हो। इतना मानो देखो, ज्ञान और विज्ञान उनकी आभा में रत्त रहने वाला हो। जिससे

मुनिवरों! देखो, वह प्रत्येक परमाणु को जानने वाला बने और परमाणुवाद में रत्त होता हुआ मानो देखो उसकी विकृति को अपने में धारयामि बनाने वाला हो। वही मुनिवरों! देखो, ऋषि कहा जाता है।

मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय बेटा! देखो, एक ऋषि समुद्र के तट पर विद्यमान थे। जिनको देखो शेवक ब्रह्मचारी कहा जाता था। वह विद्यालय से जब अध्ययन करने के पश्चात् वह मुनिवरों! देखो, समुद्र के तटों पर जा करके कुछ चिन्तन और मनन करने लगा। परमात्मा की सृष्टि को जब निहारने लगा। जब निहारते-निहारते मुनिवरों! देखो, वह विज्ञान में, भौतिक विज्ञान में रत्त हो गए। और भौतिक विज्ञान में जाकर के जब उन्होंने एक परमाणु को विभक्त किया। तो परमाणु को भी ये दृष्टिपात करने लगे, जैसे मैं परमात्मा के जगत को दृष्टिपात कर रहा हूँ। इसी प्रकार मैं परमाणु के भी ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! उन्होंने एक परमाणु का विभाजन किया। और परमाणु को जब विभक्त किया तो मुनिवरों! देखो, उसमें जब उन्होंने अपने योगाभ्यास और मन को एकाग्र करते हुए, प्राण को समर्पित करते हुए, जब मुनिवरों! देखो, उसमें दृष्टिपात किया तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक ही मानो देखो परमाणु में दृष्टिपात आ रहा है। तो विचार आता रहता है बेटा! एक-एक परमाणु में ब्रह्म ब्रह्माण्ड है, एक-एक परमाणु में मुनिवरों! देखो, मानव के जीवन की सर्वत्र रचना है।

शिशु निर्माण

जब मुझे स्मरण आता रहता है, माता के गर्भस्थल में, एक मानो देखो शिशु के रूप में एक ही मानो देखो प्रवेश होता है तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड की मानो देखो सम्पदा उसे प्राप्त हो जाती है। व सूर्य देवता प्रगट हो जाते हैं। मेरे प्यारे! माता को तो ये प्रतीत होता नहीं है क्या कौन मानो देखो कैसे वह ''अमृताम् भूतम् ब्रह्माः'' व अमृत्व चला गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भ में जैसे शिशु का प्रवेश होता है उसी प्रकार मुनिवरों! देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड के जो महान् तत्त्व हैं, वह उसके समीप चले जाते हैं। जैसे अपना-अपना

क्रियाकलाप करने के लिए जैसे मानो देखो, चन्द्रमा अमृत का प्रतीक कहलाता है। वह **चन्द्रमा** मानो देखो, अमृत देना प्रारम्भ कर देता है। जो अमृत मुनिवरों! देखो, माता के गर्भ में भी वही धारा है। मुनिवरों! पृथ्वी के गर्भ में भी वही धारा है। मुनिवरों! पृथ्वी के गर्भ में जो नाना प्रकार की वनस्पति विज्ञान है वह भी उसी आभा में, उसी अमृत में पनप रहा है। उसका समन्वय बेटा! समुद्रों से होता है। समुद्रों से जलों का उत्थान होता है और वह अपने में धारण करता हुआ, उसे अमृत बना करके मुनिवरों! देखो, उसमें प्रवेश करा देता है। माता के गर्भस्थल में, कैसे मानो देखो, अमृत शिशु को, हम जैसे बाल्यों को प्राप्त होता है। बेटा! माता की, परमात्मा की जो रचना है, वो कितनी सौम्य है, वो कितनी विलक्षण है। मेरे प्यारे! माता के रसना के निचरले विभाग में, एक मानो चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। चन्द्रमा जैसे अमृत को देना प्रारम्भ करता है, उस नाड़ी में प्रवेश कर देता है। और उसी नाड़ी का समन्वय माता की पुरातत्व नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत्व नाम की नाड़ी का समन्वय पञ्चम नाड़ियों से होता है। और पञ्चम नाड़ियों का समन्वय बेटा! देखो लोरियों से होता है। और लोरियों से जब वह पञ्चम नाड़ी गमन करती हुई, माता की नाभि से जब उनका समन्वय हो जाता है। तो माता की नाभि का और बाल्य को जो गर्भ में विद्यमान है, जैसे शिशु है बेटा! नाभि का नाभि में समन्वय हो रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू विज्ञानवेत्ता है। मानो देखो जब हम इस विज्ञान के ऊपर अपनी विचारधारा प्रारम्भ करने लगते हैं तो बेटा! एक नवीन ब्रह्माण्ड हमारे समीप आना प्रारम्भ हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो उसके पश्चात् ‘‘सम्भव ब्रव्हे क्रतम् सम्भवे लोकाम् हिरण्यम् वृथाः वृतम् देवाः’’। मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा अमृत दे रहा है। और वो किस प्रकार दे रहा है। ये मैंने तुम्हें वर्णन कराया है। मेरे प्यारे! देखो, वह **सूर्य** प्रकाश दे रहा है, प्रकाश आ रहा हैं और वह प्रकाश मुनिवरों! देखो, माता के गर्भस्थल में देखो नाभि के द्वारा वो प्रकाश मानो प्रकाशित हो रहा है। वही तो प्रकाश है जो बेटा! देखो जो सूर्यों से आता है। सूर्य का समन्वय बेटा! द्यौ से होता है। और द्यौ का समन्वय मेरे पुत्रों! देखो अमृताम् देखो सूर्य, गन्धर्व

से प्रकाश लेता है। और उस प्रकाश को लेकर के बेटा! देखो, मानव को प्रकाशित कर देता है। बाह्य जगत को भी प्रकाशित कर देता है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। कैसा महान् है।

मुनिवरो! देखो, उसके पश्चात् अब्रते, मेरे प्यारे! **अग्नि** उष्ण बनाना प्रारम्भ करती है। अग्नि उतना ही ताप देती है जितनी मानो देखो उसकी सत्ता है। जितनी वो अपने में देखो धारण कर सकता है। व ''अमृताम् भूतम् ब्रह्माः वरि'' हे अग्नेय! तू कितना प्रकाश का दूत बन करके हमारे समीप आ रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, वही अग्नि अपने में प्रकाश दे रहा है व उष्ण बना रहा है व उष्ण बना करके मुनिवरों! देखो, अपने में प्रतिभा को रत्त करा रहा है। उसके पश्चात् मेरे पुत्रों! देखो, ये **जल** आपोमयी ज्योति बन रहा है। जब माता के गर्भस्थल में कौन आसन दे रहा है। अरे! कैसे चमक रहा है। मेरे प्यारे! देखो, प्रभु का विज्ञान कितना अनन्तमयी है। देखो, बाल्य का जो ओढ़न है, वो भी आपोमयी जल है। और पॉसे भी आपोमयी जल बने हुए हैं। मेरे प्यारे! देखो, ओढ़न भी देखो उसका आपोमयी जल बना हुआ है, और वह उसी में पनप रहा है, उसी में ताप प्राप्त हो रहा है, उसी में अमृत प्राप्त हो रहा है। उसी में प्रकाश प्राप्त हो रहा है। उसी में बेटा! देखो सर्वत्र जो प्रभु का अनुपम ब्रह्माण्ड है। अरे! प्रत्येक देवता, बेटा! उसमें वास कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, कैसा महान् है वो देव! जब मैं ये विचार करने लगता हूँ तो मेरा अन्तर्हृदय गद्गद् हो जाता है। और मैं ये कहता रहता हूँ कि परमपिता परमात्मा कितना विज्ञानवेत्ता है। क्या भौतिकवेत्ता जो अनुसरण कर रहा है। विज्ञानवेत्ता समुद्र के किनारे अन्वेषण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, उससे कही परमपिता परमात्मा कितना महान् विज्ञानवेत्ता है।

प्राण की विवेचना

मेरे प्यारे! देखो, ये **प्राण**—वायु प्राण दे रहा है। और प्राण भी बेटा! देखो ब्रह्माण्ड की एक सर्व सम्पदा, उसे प्राप्त कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, **एक ही प्राण है। उसके मुनिवरों! देखो, दस भाग हैं।** उन दस भागों में

ही परणित कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वही प्राण है, वही अपान है, वही उदान है, वही समान है और वही व्यान है। मेरे पुत्रों! देखो, कैसा अनुपम ये जगत है। इसी में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड ओत-प्रोत रहता है। मेरे प्यारे! देखो, प्राण, करोड़ों, अरबों, खरबों परमाणुओं को बाह्य जगत से मानो देखो आन्तरिक जगत में लाता है। और आन्तरिक जगत से अरबों, खरबों परमाणुओं को बाह्य जगत में प्रवेश करता है। जितना भी मानो देखो, **ऊर्ध्वा गमन करने वाला जो उदान प्राण है।** मेरे प्यारे! देखो, वही तो प्राणम् ब्रह्माः, वही तो प्राण कहलाता है। जितने भी मानो देखो ऊर्ध्वागति में, चाहे वो पृथ्वी में हो, चाहे अन्तरिक्ष में हो, चाहे वे नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में क्यों न हो, परन्तु वही देखो अपना-अपना क्रियाकलाप कर रहा है। अन्तरिक्ष में ध्रुवा को गमन कर रहा है। प्रसारण सत्ता उसी में प्रवेश हो रही है। मेरे पुत्रों! देखो, अपनी-अपनी आभा में वो परणित हो रहा है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, विचारवेत्ता क्या कह रहा है। वेद का मन्त्र भी यही कहता है। मेरे पुत्रों! देखो वह ''प्राणम् ब्रह्मेः'' देखो वह जो प्राण है। वह अरबों, खरबों परमाणुओं का समूह बना हुआ है। इसी प्रकार वह जो **उदान प्राण है वो वृत्त कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो व्यान प्राण अपने में निरीक्षण कर रहा है। समान प्राण सबको प्रदान कर रहा है।**

मेरे प्यारे! देखो, यही तो उदान प्राण है जब जीवात्मा, मेरे पुत्रों! देखो, चित्त के मण्डल को ले करके मन के समीप आता है। चित्त के मण्डल को ले करके जब उदान प्राण के साथ में बेटा! ये गमन करता है तो ये मानव देखो, शरीर को त्याग देता है। इस आभा को त्याग देता है। मेरे पुत्रों! देखो, वही तो प्राण लीला कहलाती है। वही तो प्राण सत्ता कहलाती हे। इसके ऊपर हमें मनन करना है। और उसी के ऊपर हमें विचार-विनिमय करना है। मेरे प्यारे! देखो, उसके पश्चात् व्यान है, समान है। सर्व प्राणों की इसी प्रकार की आभा बनी रहती है। मेरे प्यारे! देखो, जैसे नाग प्राण है। वह नाग प्राण भी बेटा! देखो, अमृत को निगलता है। और देखो उसी समय अमृत को निगल

करके, मुनिवरो! उसका विष बना देता है। इसीलिए मानव को वेद मन्त्र कहता है, हे मानव! हे प्राणी! तू क्रोध मत कर। क्योंकि जब क्रोधाग्नि तेरे हृदय में जागरूक होती है, तो उस समय वह जो मानो प्राण है, जिसको नाग प्राण कहते हैं उसका ऊर्ध्वामुख हो जाता है। जो तेरे अन्तर्हृदय में जो भी मानो देखो अमृत है, उसको वो विष बना देता है। और वह विष किसी न किसी रूप में मानो उसको उद्धृत होता रहता है। उसका बाह्य जगत में प्रवेश होता रहता है। इसीलिए हे मानव! तू क्रोध मत कर। क्योंकि क्रोधाग्नि का समन्वय देखो वह, नाग प्राण से रहता है। जैसे नाग विष उगलता है, इसी प्रकार ये नाग प्राण भी विष उगलने लगता है। तो इसीलिए हमें विचारना है। हम अपने में मानो देखो, अपनी आभा को परणित करते रहें। मुनिवरो! देखो, नाग, देवदत्त, धनञ्जय ये प्राण हैं। अपनी-अपनी आभा में गमन करते रहते हैं।

अनन्त ज्ञान-विज्ञान

विचार आता रहता है बेटा! परमपिता परमात्मा का ये कैसा अनूठा विज्ञान है, कैसा महान् विज्ञान है। जो मेरे प्यारे! देखो, सृष्टि के प्रारम्भ में जिसकी रचना होती है और वही रचना मुनिवरो! देखो, मानव के शरीर की अनुपम एक रचना है। उसी रचना के आश्रित हो करके मानव अपने में गमन करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो माता के गर्भस्थल में, मैं गर्भस्थल की चर्चा कर रहा था, जहाँ हम जैसे शिशु पनपते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ''ब्रह्मणे वृत्तम् देवत्वाम् भविते ब्रह्माः'' वेद का आचार्य कहता है, वेद का मन्त्र भी यही कहता है। मेरे पुत्रों देखो, **अपने में अपनेपन को विचारना चाहिए।** मुनिवरों! देखो, माता के गर्भस्थल में जहाँ ये मानो देखो प्राण वायु अपनी सत्ता प्रदान कर रही है वहीं मुनिवरों! देखो, ये **अन्तरिक्ष** अपने में गमन कर रहा है। अरे! अन्तरिक्ष में ही तो मानो मानव भ्रमण कर रहा है, गमन कर रहा है। और अपने में ही अपनेपन को विचार रहा है। यही तो अन्तरिक्ष कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष वाला ये जो ब्रह्माण्ड है, ये बड़ा अनुपम है। मुनिवरो! देखो, इसको विचारना चाहिए। तो हम परमपिता

परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर कितनी विवेचना कर सकते हैं। इसका हमारे द्वारा कोई भी मानो नृत नहीं है कि हम कितना इसमें गमन कर सकते हैं। और हम इसको विचार सकते हैं कि परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान कितना अनुपम है, कितना अनूठा है, और कितना महान् है, और वो कितना कलाकार है, इसका भी वर्णन नहीं कर सकते।

वेद

मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है। जिन वाक्यों को मेरी भोली माँ नहीं जानती, उन वाक्यों को मेरे प्यारे! देखो वेद जानता है। वेद अपना अन्वेषण कर रहा है। और जिनको मानो देखो, देवभ् ब्रह्माः, ये परमात्मा का अनुपम ज्ञान है, विज्ञान है। जिसके ऊपर मुनिवरो! देखो, मानव अपने में अन्वेषण कर सकता है।

अनुपम-जगत

विचार आ रहा था, विचारवेत्ता ये वर्णन कर रहा है कि परमात्मा, मेरे प्यारे! देखो वैज्ञानिकजन, जब परमात्मा का स्मरण करने लगते हैं। परमात्मा की सृष्टि को निहारने लगते हैं। तो समुद्र के तटों पर बेटा! एक-एक परमाणु का समूह होता हुआ, एक-एक परमाणु अपने में गमन करता हुआ, बेटा! देखो, मानव शरीर का निर्माण होता है। और वही मुनिवरों! देखो, युवक वो बाह्य जगत में आता है तो युवा बन जाता है। युवा बन करके, वही वृद्धपन को प्राप्त हो जाता है। और जीवात्मा का समूह जब विच्छेद होता है तो बेटा! वही परमाणुवाद, मानो अपने-अपने रूप में परणित हो जाते हैं। वही बेटा! देखो अनुपम जगत कहा जाता है।

विचार आता रहता है। मुनिवरों! इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं। विचार ये चल रहा है कि प्रत्येक मानव, अपने में मानवीयता का दर्शन करता रहे। और अपने में ही मुनिवरों! देखो, धर्म और मानवीय पद्धति को अपनाते रहें, जिससे ये समाज पवित्र बन जाए। और हम अपने में ही देखो प्रत्येक

वस्तु का उपयोग यथार्थ रूप से कर सकें। क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही बेटा! विज्ञान अपनी आभा में गमन करता रहा है। और विज्ञान में रत्त होने वाला, मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्रवाद को पवित्र बना देता है। और राष्ट्रवाद उस काल में पवित्र बनता है जबकि महापुरुषों का समूह होता है। महापुरुष जो ये विचारते हैं, क्या कोई कर्त्तव्य का पालन कर, उससे विहीन तो नहीं हो रहा है। इसीलिए वह राष्ट्र अपनी आभा में रत्त हो करके–ब्रह्मवेत्ता हैं मुनिवरों! देखो, अपनी आभा में सदैव परणित रहे हैं।

सोम पान करने की प्रेरणा

आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है। बेटा! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ। राष्ट्र की चर्चा करते-करते, नाना प्रकार की रूढ़ियों की चर्चा करते-करते दूरी चला गया हूँ। विचार ये प्रारम्भ हो रहा था कि हम अपने में कैसे पवित्रता को धारण करें। और किस प्रकार मानो देखो अपने नाना रूपों में ब्रह्म को दृष्टिपात करते हुए उसे अपने में धारण करते चले जाएँ। और उसे सोम की भाँति हमें पान करना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो विचार-विनिमय क्या, आज का हमारा विचार ये चल रहा है कि परमपिता परमात्मा के अनूठे जगत को हम विचार सकें। और वेद मन्त्र की आभा में हम आभायित होते हुए अपने को ऊँचा बनाए। और प्राणतत्त्वों को जान करके बेटा! देखो ये महानता को प्राप्त होते रहें। क्योंकि आज मैं यदि प्राण की विवेचना करने लगूँ तो बड़ी विचित्र मानो इसकी विवेचना मानी गयी है। आज मैं इसकी विवेचनाओं में न जाते हुए हम, केवल तुम्हें परिचय देने आए। और वह परिचय हमने तुम्हें प्रगट किया। तो आज का हमारा विचार ये क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता को जान करके बेटा! हम इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यही बेटा! देखो हमारा आज का इन वाक्यों का मन्तव्य माना गया है। विचार केवल ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, प्रत्येक वेद मन्त्र में बेटा! इस ब्रह्म का दर्शन करते रहें। अपने विचारों में ब्रह्म की प्रतिभा में रत्त हो जाएँ।

मेरे प्यारे! देखो, द्रव्यवाद में भी ब्रह्म का दर्शन करते रहें। उसकी ही सम्पदा है। और उसी की सम्पदा को हम जानते हुए मुनिवरों! देखो, उस परमात्मा के राष्ट्र को, राष्ट्र में चले जाएँ, जहाँ राष्ट्र में बेटा! न तो परमात्मा के राष्ट्र में अन्धकार होता है और न मानो देखो वहाँ आलस्य और प्रमाद होता है। वहाँ निद्रा नहीं होती, वहाँ सदैव जागरूकता रहती है।

मेरे प्यारे! देखो प्रभु के राष्ट्र में जब मानव अपने को स्वीकार कर लेता है। ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ आलस्य नहीं है, प्रमाद नहीं है और रात्रि नहीं है। जहाँ रात्रि नहीं है वहाँ आलस्य नहीं है और जहाँ आलस्य और प्रमाद नहीं है वहाँ सदैव प्रकाश रहता है और जहाँ प्रकाश रहता है। बेटा! वहाँ मृत्यु भी नहीं हुआ करती। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम अपने में अपनेपन को धारण करते हुए, इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। और अपने में मनन और चिन्तन करते रहें। एकान्त स्थली में प्रभु की सृष्टि को निहारते रहें। उसके जगत को निहारते-निहारते संसार के क्रियाकलाप भी हमें चिन्तन करने के पश्चात् मानो देखो उसे निहारते हुए, उसमें भी ब्रह्म का दर्शन करते रहोंगे तो जीवन में जैसे एक प्रकाश आ जाएगी, अनुपमता आ जाएगी। तो यही बेटा! देखो हमारे जीवन की एक प्रतिभा कहलाती है। आज का ये वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वाचन्न रथः।
ओ३म् दिव्याहम् मनु वाचा रथम् आभ्याम् देवाः।
ओ३म् तनु गायन्तवाः आभ्याम् रथम् आपाः।
ओ३म् तनु गायन्तवाः आभ्याम् रथम् आपाः।

दिनाँक : 28 मार्च, 1990
स्थान : मोदीनगर, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

माँ दुर्गा

गताङ्क से आगे

मनिवरों! उसके पश्चात् आता है **"ऋतञ्च, सत्यञ्च"**। हे विधाता! तू वास्तव में सत्यंच है। तू वास्तव में सत्य है, पवित्र है। हे विधाता! अब हम तेरे आङ्गन में आने योग्य हो गए हैं। अब हम पवित्र बन गए हैं। हमने सब ही कुछ आपके अर्पण कर दिया है। उस समय प्रभु का गुण गान गाते हैं।

प्रभु का गुण गान गाने के पश्चात् प्रभु को रक्षक बनाते हैं। प्रभु हमें हिंसक प्राणियों से बचाओ। उनसे हमारी रक्षा करो। एक समय वह आता है जब परमात्मा रक्षक बन जाता है और हमारा कल्याण करने लगता है।

मुनिवरों! प्रभु मानव का कल्याण किस काल में करता है? जब हम प्रभु के आंगन में जाने योग्य हो जाते हैं। जैसे मुनिवरों! माता अपने प्यारे पुत्रों को लोरियों का पान किस काल में कराती है? जब प्यारे पुत्र व्याकुल हो जाते हैं और माता की याचना करते हैं। तब वह माता अपने पुत्र के भाव को जान लेती है कि मेरा पुत्र क्षुधा से व्याकुल है। जिसे अपनी लोरियों में लगाकर आनन्दित करा देती है। इसी प्रकार मुनिवरों! वह परमात्मा हमारी रक्षा किस काल में करता है जब हम व्याकुल हो जाते हैं और व्याकुल हो करके वैराग्य हो जाता है, केवल उस परमात्मा का ध्यान रहता है, उस काल, में परमात्मा हमारा रक्षक बन करके हमारा कल्याण करता है।

मुनिवरों! यह है ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुई सन्ध्या। ब्रह्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में मानव कल्याण के लिए सन्ध्या को उत्पन्न किया है। यह मानव के कल्याण करने वाली वह सन्ध्या है जिसका सब ही देवताओं ने अनुकरण किया है। हे सन्ध्या! तू वास्तव में अमृत को पान कराने वाली है। तेरे से देवता अमृत पान करते हैं। यह वह सन्ध्या है जिससे ऋषि बन जाते हैं, जिससे देवता बन जाते हैं, विष्णु बन जाते हैं, शिव बन जाते हैं। यह वह सन्ध्या है जिसके प्रभाव से मानव राम और भगवान कृष्ण जैसा हो जाता है। यह वह सन्ध्या है, जिसका गुणगान गा करके संसार में कल्याण की भावनाएँ आती हैं।

मेरे प्यारे! महानन्द जी ने एक समय निर्णय कराया और आधुनिक काल का एक आदेश दिया और कहा कि सन्ध्या का पाठ प्रारम्भ है। परन्तु यह जो मनीराम है यह और ही कहीं भ्रमण कर रहा है। (हास्य) यह कहीं द्रव्यों में भ्रमण कर रहा है तो कहीं पापाचारों में भ्रमण कर रहा है। हमने जो पूर्व पाप किए हुए हैं वह समक्ष आ जाते हैं और वह मनीराम उनमें लग जाता है।

मुनिवरों! मैंने अब से पूर्व अभी-अभी कहा है और पूर्व भी कह चुका हूँ कि इसके लिए सबसे पूर्व अभ्यास करते-करते अपने श्रोत्रों को प्रभु को अर्पण कर देना है। जब यह प्रभु में अर्पण हो जाएंगे और तुम प्रभु को अर्पण करोगे तो यह जो तुम्हारा मनीराम है यह शनैः-शनैः प्रभु के अर्पण किया जाएगा, प्राणायाम के अर्पण किया जाएगा। उस समय हे मानव! तुम प्रभु के आंगन में जाने योग्य हो जाओगे और प्रभु तुम्हारा कल्याण करेंगे। यह मन कहीं भ्रमण नहीं करेगा। मैंने आज से पूर्व काल में कहा है कि विकल्पों को त्याग दो और संकल्पों को धारण कर लो इससे मन का विच्छेद हो जाएगा। यह मन एक संकल्प में लग करके तुम्हारा कल्याण कर देगा।

यह है मुनिवरों! आज का हमारा आदेश जो प्रारम्भ हो रहा था। उच्चारण करते-करते बहुत दूर चले गए। उच्चारण कर रहे थे कि हे विद्या! तू हमारा कल्याण करने वाली है। माता! जब यह संसार तेरे आंगन में आ जाता है तो संसार का उत्थान हो जाता है। राजा यदि तेरा अनुकरण करता है तो राजा महान बन जाता है। मेरी माताएँ तुझे कंठ में धारण कर लेती हैं तो उनके गर्भ में वह बालक उत्पन्न होते हैं जो देवता बन जाते हैं। आज तेरा अनुकरण करने वाले देवता बन जाते हैं। आज तू सबको देवता बनाने वाली है।

मैंने परमपिता परमात्मा की कृपा से उस समय को देखा है जिस समय मेरी प्यारी माताओं का अन्तःकरण पुकार कर कहता था, मानव का अन्तःकरण पुकार कर कहता था कि हम संसार में अपने भोगों को भोगने के लिए आए हैं। हमें ऐसा कार्य नहीं करना कि भोग ही भोग लें। आज वह कर्म नहीं करना है संसार में।

मुनिवरों! वह कौन-सा भोग है संसार में जो हमें भोग लेता है?

मुनिवरों! हमारे आचार्यों ने पूर्व काल में एक पति और पत्नी का सम्बन्ध कहा है। इसका अभिप्राय है जैसे परमात्मा ने सृष्टि को उत्पन्न किया है कि मानव कर्म करे। यह उत्पन्न करने वाली सृष्टि है। इसी प्रकार मेरी प्यारी माताओं का, मेरे प्यारे भद्र पुरुषों का ब्राह्मणों द्वारा संस्कार हुआ है। आचार्यों के द्वारा प्रतिज्ञा ली है भोग भोगने के लिए परन्तु ऐसी नहीं कि भोग उल्टे हमें भोग लें। मुनिवरों! आज हमें भोग भोगना है संसार में। आज संयम को ग्रहण करना है। आज हमें पुत्र उत्पन्न करने के लिए शय्या को ग्रहण करना है। महात्मा दधीचि को, अश्विनी कुमारों को, नारद जैसे आचार्यों को उत्पन्न करना है। मेरी माताओं को राजा उत्पन्न करना है तो हरिश्चन्द्र को, राजा दलीप को, महाराजा राम जैसे राजाओं को उत्पन्न करना है। मुनिवरों! वे कैसे होंगे?

आज वे भोगों को भोगने से नहीं होंगे। वह हमारे कर्म करने से होंगे। गर्भ स्थापन हो जाए, पति-पत्नी उस प्रभु की याचना करें, उन पुत्रों को अपने में धारण करें जिससे हे माता, तेरे गर्भ स्थल में रहने वाले बालक के अंग प्रत्यंग में तेरी भावनाएँ समा करके वह महान दानी व पवित्र बने। वह तेरे अन्तःकरण से उत्पन्न होने वाला बालक पवित्र बने।

मुनिवरों! क्या करें? जैसा मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय निर्णय कराया कि आज का संसार तो कहता है कि परमात्मा ने संसार भोग भोगने के लिए उत्पन्न किया है। भोग भोगो, परन्तु आज का संसार इतना चिन्तित हो गया है कि भोगों ने ही आज के संसार को बुरी तरह भोग लिया है।

मुनिवरों! हम उच्चारण करते-करते कहाँ पहुँच गये। उच्चारण कर रहे थे, 'हे परमात्मन! तू कल्याण करने वाला है। हे सन्ध्या! तू कल्याण करने वाली है। आज हमें सन्ध्या का पूजन करना है। सन्ध्या के गुणों को अपने में धारण करना है। हमें माता दूर्गे की याचना करनी है। हे माता! तू अष्ट भुजों वाली और कल्याण करने वाली है। तू आ और कल्याण कर। यज्ञ करना है। उसके समीप जाना है। यह है बेटा आज का हमारा आदेश। अब यदि समय मिला तो शेष वाक्य किसी द्वितीय काल में प्रकट किए जाएँगे।

(20 अक्तूबर 1963 (दुर्गा अष्टमी) प्रातः 7 बजे भारत सेवक समाज, सरोजनी नगर, नई दिल्ली)

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. जहाँ द्रव्य को नीचे त्याग दिया जाता है, चरित्र को आगे लिया जाता है वह राष्ट्र, वह समाज संसार में महान् पवित्र कहलाता है।
2. शिक्षालयों में यदि उपनिषदों एवम् दर्शनों की विद्या नहीं दी जाएगी तो वह राष्ट्र सात जन्मों में भी ऊँचा नहीं बन सकेगा।
3. ज्ञान और प्रयत्न से राष्ट्र का निर्माण होता है।
4. यदि हम यथार्थ सँकल्पवादी बनते हैं तो हमारे जीवन में मानवीयता के अँकुर ओत-प्रोत हो जाते हैं।
5. विचारों की दृढ़ता को त्याग और तपस्या कहते हैं।
6. वास्तव में मानव की यह मर्यादा है कि वह दूसरों के गुणों को देखता रहे।
7. यदि मानव मर्यादा से पृथक् चलता है तो पुण्य कर्म भी समाप्त हो जाते हैं।
8. शान्ति का प्रतीक अपने कर्त्तव्यों का पालन करना है, अपनी मर्यादा का पालन करना है।
9. मानव का विकास विद्या के द्वारा होता है, उदारता के द्वारा होता है।
10. उदार बनना एक विशेषता है, उदार बनने से मानव का कल्याण होता है।
11. आस्था और आत्मविश्वास के ऊपर मानव जीवन का कल्याण हो जाता है।
12. मुनि उसे कहते हैं जिसने अपनी मनरूपी तरङ्गों को शान्त कर लिया हो। मनरूपी तरङ्गों को बुद्धि में रमण कर दिया हो, उसको ऋषि कहते हैं।
13. उदार बनने वाले वह होते हैं जो नाना-नाना प्रकार की आपत्तियाँ सहन करते हैं।
14. बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा–चार प्रकार की मानव की बुद्धि की धाराएँ होती हैं।
15. बुद्धि और मेधावी का जो क्षेत्र है वह तो केवल भौतिक विज्ञान का क्षेत्र है। ऋतम्भरा और प्रज्ञावी का यह दोनों आध्यात्मिक विज्ञान के क्षेत्र हैं।
16. आध्यात्मिकवाद से विवेक होता है और विवेक से नम्रता होती है।

॥ ओ३म् ॥

विनम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व जन्म के शृङ्गी ऋषि) की तपोस्थली लाक्षागृह बरनावा की पावन भूमि पर उनके द्वारा स्थापित आश्रम, गुरुकुल व गौशाला संचालित हो रहे हैं। आश्रम पर प्रति वर्ष रक्षा बन्धन, गुरुदेव के जन्मोत्सव पर सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवम् फाल्गुन मास में पाँच यज्ञशालाओं पर चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाता है तथा गुरुकुल में 100 के लगभग ब्रह्मचारी छठी से बारहवीं तक निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करते हैं एवम् गौशाला में भी 40 के लगभग गौवंश हैं। इन कार्यों के लिए 6 अध्यापक व पाँच कर्मचारी भी संस्था की ओर से कार्यरत हैं। गुरुजी के समय से ही ये सब आयोजन आप सब दानियों के सात्त्विक दान से सम्पन्न हो रहे हैं। कोरोना महामारी मे लॉक डाउन के समय भी 2-3 अगस्त (रक्षा बन्धन) एवं 4-5 सितम्बर (गुरुदेव का जन्मदिन) को भी विधि-विधान से सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन हुआ है। लेकिन प्रशासन की अनुमति न मिलने के कारण श्रद्धालु, यज्ञ-प्रेमी, दानदाता उक्त यज्ञों में न तो भाग ले सके और न ही अपना सहयोग प्रदान कर सके। उक्त कारण वर्तमान समय में आश्रम संचालन में आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इस कारण आप सभी श्रद्धालु यज्ञ-प्रेमियों से विनम्र-निवेदन है कि अपनी श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार संस्था के निम्न खाता संख्या में अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

श्री गाँधी धाम समिति लाक्षागृह बरनावा (बागपत)

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया बरनावा (बागपत)

खाता संख्या : 11650180365 **IFC कोड :** SBIN0006602

—: निवेदक :—

यशोधर्मा सोलंकी	**राजपाल त्यागी**	**ठा. वीर सिंह**
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
विनोद शास्त्री	**गुरुवचन शास्त्री**	**अरविन्द शास्त्री**
प्रधानाचार्य	सहायक अध्यापक	सहायक अध्यापक

एवम् समस्त गुरुकुल परिवार

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आओ, आज हम उच्चारण करते चले जाएँ, कि वह देव की जो अनुपम देन है, वह जो अनुपम प्रकाश है उसमें नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान आता है और नाना प्रकार की प्रतिभा उसमें हमें विराजमान होती प्रतीत होती है। आज हम उस महान् देव, वेदवाणी में ही, प्रभु की आनन्दमयी जो देन है उसका अनुवाद करते हुए, वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है हे महाप्रभु! अकृते! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है, जीवन को उदबुद्ध करने वाला है। तेरी ही महती, अनुपम कृपा से यह हमारा जीवन उदबुद्ध हो रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 49 : अंक : 574
नवम्बर 2020

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-11-2020
Published on 5th day of the same month